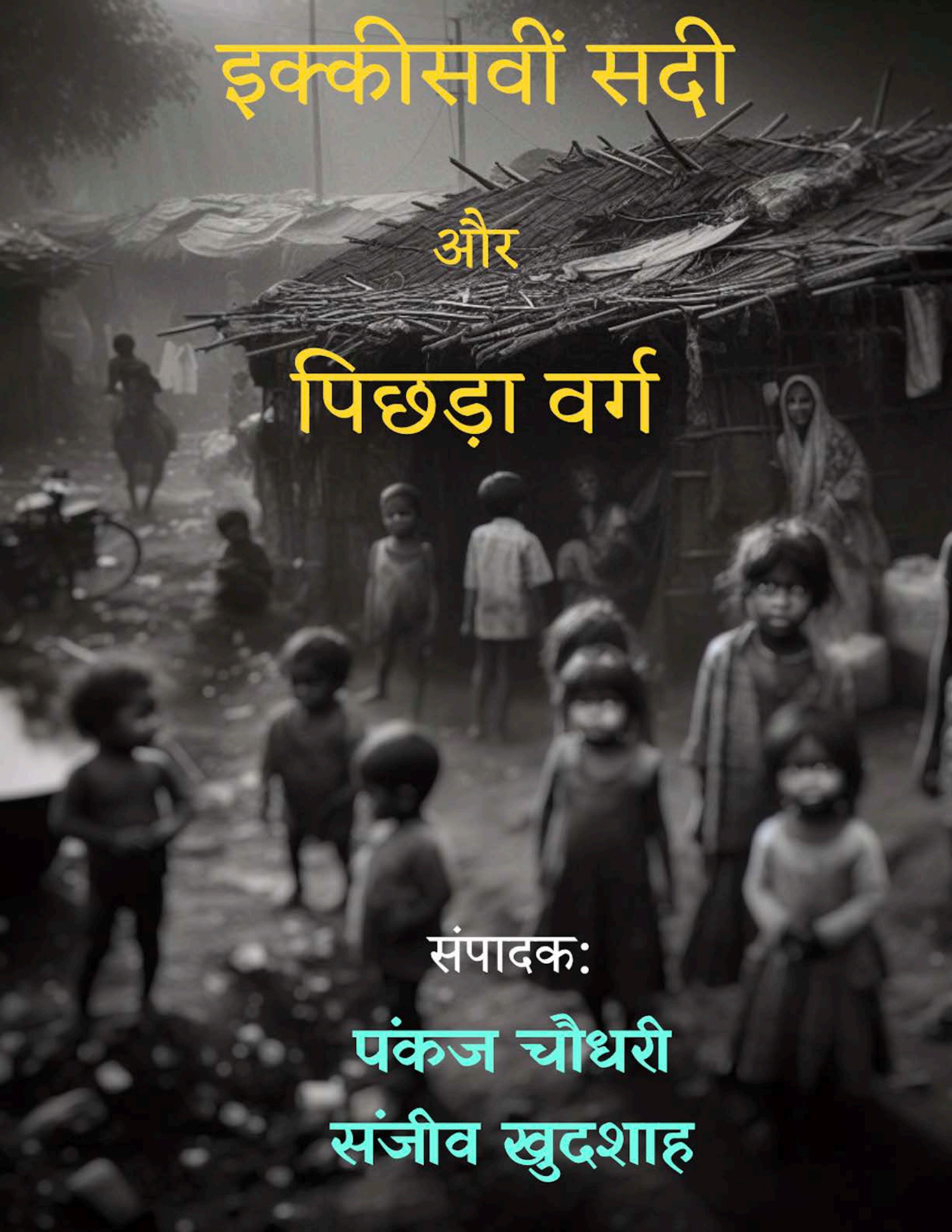
इक्कीसवीं सदी
और
पिछड़ा वर्ग
संपादक:
पंकज चौधरी
संजीव खुदशाह

इक्कीसवीं सदी और पिछड़ा वर्ग

संपादक :

पंकज चौधरी

संजीव खुदशाह

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: दिसंबर, 2024

अनुक्रम

संपादकीय

साम्प्रदायिक नहीं हैं पिछड़ी जातियां 9

पंकज चौधरी

पिछड़ा वर्ग साहित्य आंदोलन खड़ा करेगा 17

संजीव खुदशाह

धरोहर

जाति-प्रथा नाश : क्यों और कैसे? 22

डॉ. राममनोहर लोहिया

इतिहास आंदोलन संस्कृति स्त्री

भारतीय समाज में वर्चस्व व प्रतिरोध 58

प्रेमकुमार मणि

केरल का नवजागरण और एसएनडीपी योगम् 73

बजरंग बिहारी तिवारी

वर्ण व्यवस्था एवं जाति प्रथा : मिथक तथा भ्रांतियां 102

बृजेन्द्र कुमार लोधी

पराधीनता व आत्मग्लानी का बोझ 112

सीए विष्णु दत्त बघेल

समाज राजनीति नेतृत्व

नमो को पिछड़ा बताने के निहितार्थ 126

अनिल चमड़िया

उत्तर का राजनीतिक नवजागरण 137

पंकज चौधरी

राजनीति सत्ता और पिछड़ा वर्ग 151

केएस तूफान

नेतृत्वविहीन है पिछड़ा वर्ग 156

राम शिवमूर्ति यादव

मीडिया

भारतीय मीडिया और शूद्र 173

उर्मिलेश

हाशिए का समाज मीडिया में भी हाशिए पर 179

संजय कुमार

पसमांदा मुसलमान

पसमांदा ही भगाएंगे साम्प्रदायिकता के भूत को 190

अली अनवर

कौन समझेगा पसमांदा मुसलमानों का दर्द 200

कौशलेन्द्र प्रताप यादव

पसमांदा मुस्लिम की अस्मिता के प्रश्न 205

ईश कुमार गंगानिया

पसमांदा मुसलमानों को भी एक आम्बेडकर की तलाश 228

प्रो. मो. सईद आलम

अति पिछड़ी जातियां

यूपी में अति पिछड़ी जातियों की दशा-दिशा 246

डॉ. राम बहादुर वर्मा

बदलते आर्थिक परिवेश में अति-पिछड़ा वर्ग 262

डॉ. पीएन राम प्रजापति

राजनीतिक दल अति पिछड़ों को ठगना छोड़ें 281

महेन्द्र मधुप

एकता/ अन्य

आम्बेडकरवाद ही एकमात्र विकल्प 288

मूलचंद सोनकर

पिछड़ा वर्ग और उनकी दिशा-दशा 319

केशव शरण

दलित-पिछड़ा भाई-भाई, तभी होगी केन्द्र पर चढ़ाई’ 325

डॉ. धर्मचन्द्र विद्यालंकार

दलित-पिछड़े शूद्र-शूद्र, फिर क्यों इतने दूर-दूर 334

डॉ. हरपाल सिंह पंवार

ब्राह्मणवाद के जुए को उखाड़ फेंके पिछड़ा वर्ग 341

रमेश प्रजापति

चित्रगुप्त के वंशज 352

इला प्रसाद

हक़ न पा सकने वाली नस्ल 359

यशवंत

आरक्षण

पिछड़ों को आरक्षण मान्यवर कांशीराम की देन 377

महेश प्रसाद अहिरवार

पिछड़ा आरक्षण : काका कालेलकर से मण्डल मशीन तक 403

राम सूरत भारद्वाज

सामाजिक एवं शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा वर्ग 416

जवाहरलाल कौल

ओबीसी आरक्षण : एक विवेचन 426

भीमराव गणवीर

साक्षात्कार

ब्राह्मणवादी दर्शन ने ओबीसी को दलितों का दुश्मन बनाया 436

(मशहूर चिंतक कांचा इलैया से संजीव ख़ुदशाह की बातचीत)

उच्च वर्ग का पुछल्ला रहा है पिछड़ा वर्ग 441

(मरहूम साहित्यकार राजेन्द्र यादव से संजीव ख़ुदशाह की बातचीत)

विश्वसनीय नहीं है पौराणिक नायक 447

(प्रसिद्ध चिंतक मुद्राराक्षस से संजीव ख़ुदशाह की बातचीत)

गांधी की सलाह पर आम्बेडकर कानून मंत्री बने 451

(मरहूम समाजवादी मस्तराम कपूर से संजीव ख़ुदशाह की बातचीत)

आम्बेडकर का ऋणी होना चाहिए पिछड़ी जातियों को 456

(प्रसिद्ध आलोचक-विचारक चौथीराम यादव से संजीव ख़ुदशाह की बातचीत)

ग़रीब-ग़रीब एक समान, हिन्दू हों या मुसलमान 468

(प्रसिद्ध संस्कृतकर्मी डॉ. शम्सुल इस्लाम से राजेश चौहान की बातचीत)

सिर्फ़ वोटबैंक बने हैं पिछड़े 475

(वरिष्ठ कथाकार असगर वजाहत से राजेश चौहान की बातचीत)

राष्ट्रीय स्तर की चेतना का अभाव है ओबीसी में 480

(फ़ारवर्ड प्रेस के संपादक आयवन कोस्का से संजीव ख़ुदशाह की बातचीत)

मंडल ने पिछड़ों को गतिशील बनाया 506

(चर्चित पत्रकार दिलीप मंडल से संजीव ख़ुदशाह की बातचीत)

पिछड़ों का ईगो काम करता है दलितों के ख़िलाफ़ 511

(प्रो. रमाशंकर आर्या से संजीव ख़ुदशाह की बातचीत)

पुस्तक वार्ता

द्विजवर्णीय नहीं है कायस्थ 517

रामेश्वर पवन

ग़रीबों का हमदर्द कर्पूरी ठाकुर 527

गणेश प्रसाद

आधुनिक भारत में पिछड़ा वर्ग 537

संजीव ख़ुदशाह

भारत में ब्राह्मण राज और पिछड़ा वर्ग आन्दोलन 551

संजीव ख़ुदशाह

एक जानकारी परक कृति 556

संतोष सोनी

त्रासदी 565

अभय मौर्य

संपादकीय

साम्प्रदायिक नहीं हैं पिछड़ी जातियां

पंकज चौधरी

पिछले कुछ सालों से मुख्यधारा का मीडिया यह दुष्प्रचार करने में मुब्तिला है कि पिछड़ी जातियां साम्प्रदायिक हैं। मुख्यधारा का मीडिया अपने इस दुष्प्रचार में तब और सफल होता हुआ दिखता है जब आम लोगों के साथ-साथ बुद्धिजीवी तबका भी इस धारणा को बल देता है कि सही में, पिछड़ी जातियों का चरित्र और प्रकृति साम्प्रदायिक किस्म की हैं या वर्तमान में देश में साम्प्रदायिकता का जो उभार देखने में आ रहा है उसको अंजाम पिछड़ी जातियों के लोग ही देते आ रहे हैं। देश के बुद्धिजीवी तबके की यह राय भाजपा में शामिल पिछड़ी जातियों की पृष्ठभूमि से आने वाले कुछ नेताओं की साम्प्रदायिक घटनाओं में संलिप्तता के आधार पर बनती है। बुद्धिजीवी तबका यह पड़ताल करने की कोशिश नहीं करता कि क्यों भाजपा के ही ये नेता साम्प्रदायिक घटनाओं में संलिप्त पाए गए हैं। वे सीधे-सीधे इन कुछ नेताओं के अपराध को तमाम पिछड़ी जातियों पर नियम की तरह लागू कर देते हैं कि सचमुच पिछड़ी जातियां साम्प्रदायिक हैं। ऐसा करके वे चीजों का सरलीकरण तो करते ही हैं साथ ही एक सोची-समझी रणनीति के तहत इस तरह के दुष्प्रचार को भी बढ़ावा देते हैं। वे इस हकीकत पर भी परदा डाल देना चाहते हैं कि पिछले 25-30 सालों से भारत में धर्मनिरपेक्षता की जो राजनीति विकसित हुई है या धर्मनिरपेक्ष मूल्यों की जो रक्षा हुई है वह पिछड़ी जातियों के नेतृत्व वाले राजनीतिक दलों की वजह से ही संभव हुई है।

आज हम जिस 'जनता परिवार' का अस्तित्व देख रहे हैं वह तो पूरा का पूरा पिछड़ी